ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-11* December- 2019
Innovation The Research Concept

बिहार में बौद्ध स्थापत्य और शिल्प कला के क्षेत्र में अशोक का योगदान : एक अध्ययन

बदर आरा
भारतीय इतिहास एवं पुरात्व विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना, भारत

सारांश

प्राचीन भारतीय संस्कृति के निर्माण काल में ब्राह्मणवादी व्यवस्था के प्रतिरोध में सृजित नव सम्प्रदायों ने अपनी पहचान बनाए रखने के लिए उपलब्ध स्थापत्य एवं शिल्प कला में कुछ विशिष्ट मान्यताओं के अनुरूप परिवर्तन करके नई शैली का विकास किया। इसके विकास में बिहार के कुशल शिल्पियों तथा बौद्ध भक्तों ने चैत्य, बिहार मंदिर भित्ति चित्र एवं बुद्धमूर्ति का निर्माण करके बौद्धधर्म के विकास में जो सहयोग दिया वह अमूल्य है।

ईसा के 255 वर्ष पूर्व अशोक ने राजधर्म के रूप में बौद्ध धर्म को प्रस्थापित किया। धार्मिक व्यवस्था से किये गये इस परिवर्तन के कारण बौद्धकला भी प्रभावित हुई बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के लिए नये स्वरूप और प्रतीक प्रयुक्त किये जाने लगे। मौर्यकालीन प्रतीकों की तुलना में अशोक ने अधिक सौन्दर्ययुक्त प्रतीको के निर्माण पर बल दिया बौद्ध कालीन स्थापत्य और शिल्पकला मूलतः पत्थरों पर अभिलेखों की खुदाई, बहुसंसख्यक स्तूपों के निर्माण, स्तम्भों मंदिरों महलों और पहाड़ी गुफाओं में परिलक्षित होता है। निर्माण कला की दृष्टि से स्तूप की संरचनात्मक विशिष्टता और पत्थरों के विशाल स्तम्भों की कलात्मक गुणवत्ता अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। गुफाओं के निर्माण में प्रयुक्त उच्च स्तरीय तकनीकी और स्थापत्य की दृष्टि से सौन्दर्य कला की प्रतिमूर्ति महलों आदि के माध्यम से तत्कालीन बौद्ध कला और स्थापत्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रति अपने विश्वास को स्थापित प्रदान करने के लिए साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में पत्थरों के अभिलेख युक्त स्तम्भ स्थापित कराये।[1] वस्तुतः बौद्ध के प्रति उसका अनुराग कलात्मक सृजनात्मकता के स्थायित्व जुड़ा हुआ था। ईश्वरीय विधानों निरंतरता को बनाए रखने के लिए वह शिलालेखों को प्रमुख माध्यम स्वीकार करता था[2] अशोक ने अपने साम्राज्य में स्तूपो का निर्माण कराया जो स्थायित्व के प्रतीक थे। वातावरण के बदलते हुए प्रभावों से निष्प्रभावी रहने वाले स्तूपों की संरचना इस प्रकार सुनिश्चित की गई थी कि कई शताब्दियों तक में स्थायी रह सकें। स्तूपों के चारो ओर पत्थर लगाये गये थे। साथ ही साथ उन परअभिलेख बद्ध पट्टिकाएँ भी लगायी गई थी। सिहों से युक्त प्रतीक स्तंभ पाटलीपुत्र और अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध बिहारों के पास प्रस्थापित किये गये। इनमें सब से महत्पूर्ण विशिष्टता यह रही है कि उनकी विशेष पालिश की गयी थी। जिससे अशोक कालीन स्तम्भों, अभिलेखों और अवशेषों को सुगमता पूर्वक पहचाना जा सकता है।[3]

अशोक कालीन बौद्ध कलाओं में पत्थरों की कटाई और उसे स्थायी बनाकर सुसज्जित करने की क्रियाएँ एक नयी सांस्कृतिक कृांति के उद्भव का संकेत देती है। चूँकि एक महान सम्राट द्वारा यह पोषित था। इससिलए इनके विकास में अधिक सरलता और सहजता रही। ग्रीक और पार्शिया की संस्कृति के प्रतिबिम्ब अशोक कालीन बौद्ध कला में दिखाई देती है। यह उल्लेखनीय है कि पर्शियन साम्राज्य के नष्ट हो जाने के बाद वहाँ से विस्थापित हुए कलाकार अशोक के दरबार में स्थान प्राप्त करने में सफल हुए थे।[4] इन कलाकारों की कला कौशल का अशोक द्वारा सहजता से उपयोग किया गया। बिहार में चुनार के पास ग्रीक एंव पर्शिया में प्रशिक्षित कलाकारों के एक छोटे से समूह को पत्थरों के विभिन्न कलात्मक अभिलेखों के निर्माण कार्य में लगाया जाता था।[5] पर्शियन परम्परा से प्रशिक्षित इन कलाकारों ने विशाल स्तम्भों की रचना की । इन कलाकारों द्वारा इस प्रकार के करीब तीस बड़े स्तम्भ बनाए गये। बिहार के चम्पारण जिले में दो स्तम्भ अभी भी अच्छी दशा में है इन्हे भारतीय संग्रहालयों में रखा गया है। सामान्यतः स्तम्भों को बौद्ध बिहारों या बुद्ध के भ्रमण पथ के

महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रस्थापित किया गया (6) चम्पारण और मुजफ्फरपुर जिलों के रामपुरवा, आराराज, नंदनगढ़ और कोल्हुआ में लगाये गये पत्थर पाटलिपुत्र से नेपाल की ओर जाने वाले पुरान राजकीय मार्ग को इंगित करते हैं। प्रत्येक स्तम्भ पर सिंह प्रतीक प्रस्थापित किया जाता था। 30 से 40 फीट लम्बे इन स्तम्भों को बिना किसी सहारे के खड़ा किया जाता था। इसका ऊपरी सिरा लगभग 2 फीट व्यास का होता था, ऊपरी सिरे पर बौद्ध प्रतीक आदि के साथ स्तम्भ की लम्बाई लगभग 50 फीट हो जाती थी। स्तम्भों के साथ–साथ वृक्ष–पूजा को भी प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था[7] बौद्ध कालीन स्तम्भों के साथ–साथ गया, पाटलिपुत्र जैसे महत्वपूर्ण स्थानों पर बौद्ध बिहारों एंव मंदिरो का भी निर्माण कराया गया था। अशोक ने इन बिहारों के निर्माण के लिए स्थानीय दक्ष कलाकारों का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त गुफाओं का भी निर्माण कराया गया जिनमें उन्नत चित्रकारी और अभिलेख भी शिल्पांकित किये गये।

सम्राट अशोक ने अपने धर्मधोग–काल में भगवान बुद्ध के स्मृति रक्षार्थ तथा धर्म की चिरस्थिति के लिए राजगृह तथा अन्य छह स्तूपों में रखी गई बुद्ध धातुओं को निकालकर उनपर लगभग तीन वर्षो में 84 हजार (लगभग) स्थानों में स्तूपों का निर्माण कराया। इन 84 हजार स्तूपों के निर्माण का समाचार अशोक को पाटलिपुत्र में एक साथ ही मिला।[8] समाचार प्राप्त होने पर अशोक ने पाटलिपुत्र में तथा अपने सम्पूर्ण राज्य में बड़ी धूम धाम से उत्सव मनाया और राजय सीमा के एक–एक योजना पर अतुल दान भी दिया था।[9] इन स्तूपों में एक को जलालाबाद में एक को कुसीनारा में, एक को शाहाबाद जिलें में 'मसाढ़' ग्राम से पूरब 6 मील पर एक को वैशाली में और एक की पाटलिपुत्र में (जो अब नहीं है) जिसे चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में भी देखा था।

इन स्तूपों के अतिरिक्त सम्राट अशोक ने धर्म की चिरास्थिति के लिए वैशाली, लोरिया नन्दनगढ़, रामपुरवा, लुम्बिनीवन, नेपाल की तेराई के गाँव निम्नलवा, सारनाथ, काशी (वरुणा नदी के किनारे) कौसाम्बी, श्रावस्ती, राँची, टोपरा, मेरठ आदि स्थानों में कुशल शिल्पियों द्वारा निर्मित प्रस्तर–स्तम्भ गड़वाकर धर्मलेख खुदवाये। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न स्थानों में धर्म प्रचार के लिए सम्राट ने शिलालेख भी अंकित कराये, जो हमारे गौरवमय इतिहास के ज्वलन्त प्रतीक हैं। इसके अलावा अनेक बौद्ध बिहारों[10] एवं गुफाओं[11] का भी निर्माण कराया था। स्तम्भों के निर्माण में, उन पर लेप चढ़ाने में तथा स्तम्भ–शिखर की नानाविध मूर्तियों[12] में बिहार के कलाकारों ने जो आश्चर्यजनक कौशल दिखलाया है, उनका सादृश्य संसार में नहीं मिलता।

स्तम्भों पर अंकित अधोमुख कमलपुष्प उष्णीश (पगड़ी) चौकी, पाश (रस्सी) और साढ़ तथा सिंह की मूर्ति में जिस कला–कौशल का प्रदर्शन किया गया है, वह सर्वथा दर्शनीय है, उन स्तम्भों की उन स्तम्भों की स्फटिक स्निग्ध पॉलिश किस विधि से बनाई गई थी, इसकी जानकारी आज तक नहीं मिल सका। इसी तरह इन विशालकाय स्तम्भों का निर्माण, इस युग में, कैसे हुआ और चुनार में बने हुए ये स्तम्भ इतनी दूर–दूर तक कैसे लाये गये इनमें कितनी धन–राशि व्यय हुई ये सारी बाते भी आजतक रहस्य की बात बनी हुई है।

अशोक के समय में भगवान बुद्ध के मूर्ति निर्माण का पता नहीं चलता है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है। कि उस समय तक मूति–निर्माण कला का विकास नहीं हुआ था। उस समय जब सिंह सांड़ आदि पशु मूर्तियाँ बनती थी, तब मनुष्य मूर्ति कैसे न बनती होगी, इसके अतिरिक्त कौटिल्य के अर्थषास्त्र में देव–देवी की मूर्तियों का प्रचुर उल्लेख प्राप्त होता है। मौर्य काल की दीदारगंज की दक्षिणी मूर्ति जो कला का अनुपम देन है, के अतिरिक्त उससे हजारो वर्ष पहले के नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से भी हमें अनेक मूर्तियाँ मिल चुकी हैं। स्वयं बौद्ध ग्रंथों की बुद्धकालीन वार्ताओं में भी मूर्ति निर्माण की चर्चा हुई है। मगध के पिप्पली माणवक (महाकश्यप) की पत्नी कैसी होनी चाहिए, इसके लिए उसके माता–पिता ने कारीगरी से नमूने के लिए सुवर्ण की एक नारी–मूर्ति बनवाई थी और उसे देकर तट्रूय वधू की खोज में ब्राह्मणों को साकल प्रदेश में भिजवाया था।[14] स्वयं अजातशत्रु ने राजगृह के चैत्य–निर्माण में बुद्ध के माता–पिता और स्थविरों की मुर्ति बनवाकर बैठाई थी। इसके अतिरिक्त 'खारवेल' के शिलालेख से यह ज्ञात होता है। कि मगध सम्राट नन्दिवर्द्धन कलिंग को जीतकर वहाँ से एक जिनमूर्ति को पाटलिपुत्र उठा लाया था[15] जो अशोक के बहुत पहले की घटना थी बाद में इस मूर्ति को 'खारवेल'(अशोक के बाद) वृहद्रथ मौर्य को जीतकर प्रचुर वैभव के साथ पाटलिपुत्र से कलिंग ले गया। इस सारी बातों से भली–भांति पता चलता है कि अशोक काल में मूर्ति निर्माण की कला पूरी तरह विकसित थी।

सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध की मूर्ति बनवाकर उसे स्थापित नहीं कराया, इसका मुख्य कारण यह था कि अशोक हीनयान सम्प्रदाय को माननेवाला था। हीनयान में बुद्ध मूर्ति का निर्माण वर्जित है। इस सम्प्रदाय के अनुसार बुद्ध के प्रतीकों की ही पूजा की जा सकती है। जैसे–वज्रासन, वृक्ष, उत्णीय, चक्र, स्तूप, पदचिन्ह, चक्रम स्थान आदि। भगवान बुद्ध ने अपने परिनिर्वाण काल में प्रिय शिल्प आनन्द से कहा थ कि मेरे निर्वाणोपरान्त मेरी धातुओं की पूजा हो, मेरी मूर्ति की नहीं[16] बुद्ध के इस आदेश का हीनयान (स्थविरबाद) ने कड़ाई के साथ पालन किया। यही कारण रहा कि अशोक काल में बुद्ध मूर्ति का निर्माण नहीं हो सका, केवल उनकी जीवनलीला और उनके उपकरणों को ही मूर्त रूप दिया गया।

निःसंदेह सम्राट अशोक ने अपने समय में बौद्ध स्थापत्य एवं शिल्पकला को बहुतबुलंदी पर ले गये। इस क्षेत्र में उसके द्वारा किये गये योगदान अनुपम तथा अतुलनीय हैं। उनके द्वारा किये गये योगदानों से सिर्फ बिहार ही नहीं सम्पूर्ण भारत का मस्तक दिग्दिग्नत विश्व

मानव पटल पर सुशोभित रहेगा तथा आज भी ये शोध तथा अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय माना जाता है।

सन्दर्भ :

1. पर्सी ब्राउनः इण्डियन आर्किटेक्चर (बुद्धिष्ट एण्ड हिन्दू पीरियड) बाम्बे, 1996, पृ0 01
2. वी. स्मिथ, हिस्ट्री ऑफ आर्टस इन इंडिया पृ0 60–62
3. पर्सी ब्राउन, पूर्वोव्रत पृ0 13–14
4. ए. कनियम, एन्शियेन्ट ज्योग्राफी आफ इंडिया, बुद्धिस्ट पीरियड, लन्दन 1871 पृ0 8
5. ए. फाउचर, द जिगनिंग ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट एण्ड अदर एसेज, लन्दन 1917 पृ0 31
6. वी.ए. स्मिथ, अशोक द बुद्धिष्ट इम्पायर ऑफ इंडिया आक्सफोर्ड – 1907 पृ0 16
7. ए. एच. लांगहर्स्ट, द स्टोरी ऑफ द स्तूपाज, कोलम्बों 1936 पृ0 78
8. महावंश, परि0 5 पृ0 176
9. वही परि0– 5 पृ0 177–180
10. पाटलिपुत्र का अशोका राम और कुक्कुरा राम बिहार
11. गया जिले के बराबर पहाड़ी की गुफाएँ
12. सारनाथ स्तम्भ की सिंहमूर्ति और रामपुरवा के स्तम्भ की वृषभ–मूर्ति
13. कुमार अमरेन्द्र, पुरातत्व और बिहार, पटना 2004 पृ0 26, 27
14. हेमेन्द्र विकास चौधरी (सं.) अशोका 2300, (अशोक कुमार भट्टाचार्यका लेख ए फाउन्डेशन ऑफ अशोकन आर्ट) कलकत्ता 1997 पृ0 128–134
15. वही
16. दीध निकाय, परिनिवासुत।